कियो बूझि नै सकल हमरा

कियो बूझि नै सकल हमरा

ओम प्रकाश

श्रुति प्रकाशन, दिल्ली

ISBN : ९७८-९३-८०५३८-८७-७

मूल्य: भा. रु.२००/-

पहिल संस्करण : २०१२.

श्रुति प्रकाशन रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११)२५८८९६५७

Website:http://www.shruti-publication.com

e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-११...२

Typeset by: Umesh Mandal.

Distributor: *Pallavi Distributors*, Ward no- ६, Nirmali (Supaul), मो.- ९५७२४५०४०५, ९९३१६५४७४२

Kiyo Boojhi Nai Sakal Hamara: ***Maithili Ghazal,Rubai and Kata*** *by Om Prakash.*

अपन दिससँ

आइ हम अपने सबहक हाथमे ई पोथी समर्पित करैत बहुत प्रसन्नताक अनुभव कऽ रहल छी। हमर ई पहिलुक प्रकाशित पोथी थिक आ सेहो मैथिली गजलक थिक, ई बात हमरा बहुत आनन्दित करैत अछि। किएक तँ हम आनो विधामे मैथिली साहित्य लिखैत छी, मुदा हम मूल रूपसँ अपनाकेँ गजलकार मानैत छी। हम ओना तँ नेनपनेसँ किछु-किछु लिखैत रहलौं, खास कए तुकबन्दी करबामे हमरा नीक लागैत रहल, मुदा गजलकारक रूपमे हमर उदय मात्र "अनचिन्हार आखर" आ "विदेह"क प्रयास आ सहयोगक परिणाम थिक। तीन गोटे जे बिना कोनो लोभ आ हेतुक ऐ पाछाँ रहलाह अछि, तिनकर उल्लेख कएने बिना हमर प्रयास आ मेहनति निष्फल हएत। ओ तीन गोटे छथि सर्वश्री गजेन्द्र ठाकुर, आशीष अनचिन्हार आ उमेश मंडल। आदरणीय गजेन्द्र भाय द्वारा लिखित मैथिली गजलशास्त्रक अध्ययन करैत रहलापर शनैः शनैः हमरा गजल लिखबाक किछु ज्ञान प्राप्त भेल। संगहि शुरूआती समैमे हमर काफिया आ रदीफक शुद्धिकरणमे हुनकर अपूर्व योगदान रहल छन्हि, जे बिसरनाइ हमरा लेल अपराध हएत। ओहिना आशीष भाय हमरा बहरक दुनियाँमे आनलथि। हुनके प्रेरणा रहलन्हि जे हम शुरूहेसँ बहरमे गजल लिखैत रहलौं। पहिने सरल वार्णिक बहरमे लिखलौं आ बादमे आशीष भाय हमरा अरबी बहरक दुनियाँमे ढुकेने गेलाह। हम अरबी बहरक जे थोड़ बहुत जनतब प्राप्त कऽ सकलौं, ओकर पूरा-पूरी श्रेय आशीष भायकेँ जाइत छन्हि। हुनकर ई ऋण हम कहियो नै उतारि सकैत छी आ हम हुनकर आभारी जिनगी भरि रहए चाहै छी। तेसर महत्त्वपूर्ण व्यक्ति छथि उमेश भाय, जिनका हम सिनेहसँ डाक्टर साहब कहैत छियन्हि। डाक्टर साहब हमरा मोबाईलसँ फोन कऽ कए जे प्रेरणा दैत रहलाह, से अनुपम छै। ओ सदिखन हमर उत्साह बढ़ाबैत रहलाह आ हुनकर ई अदम्य इच्छा रहलन्हि जे हमर गजलक पोथी प्रकाशित हुए। गजल लिखबा लेल ओ हमरा खूब प्रेरित करैत रहलाह आ संगहि हमर गजलक तत्काल समालोचक बनि कऽ हमर लिखनाइमे सुधार आनबाक प्रयास करैत रहलाह। ई तीनू गोटे हमरा लेल अविस्मरणीय छथि आ सदिखन रहताह।

हमर साहित्य सृजनक ई पहिलुक प्रकाशनक सुअवसरपर हम अपन पिता आदरणीय श्री पीताम्बर झा आ माता आदरणीया श्रीमती रामकुमारी झाक योगदानक चर्च आवश्यक बूझै छी। हमर बाबूजी सदिखन किछु ने किछु लिखैत रहैत छथि, मैथिली पत्र पत्रिकाक संकलन करैत रहैत

छथि आ परम समाजवादी विचारधाराक लोक छथि। हुनकर साहित्य प्रेम आ लेखन हमरामे आनुवांशिक रूपेँ आएल अछि, से हम अनुभव करैत छी। हुनकर समाजवादी सोच आ पूजनीया माताजीक उदारवादी सोच हमरा बड्ड प्रभावित कएने अछि आ हम ऐ प्रभावमे जिनगी भरि रहए चाहै छी। हमरा हुनका सभ दिससँ भेटल संस्कारपर गर्व अछि आ हमर रचना हुनके सभक संस्कारक प्रतिफल अछि, तँए हम हुनका सभकेँ चरण कमलमे अपन रचना समर्पित करैत छी। ई चर्च अधूरा रहि जाएत, जँ हम अपन पहिलुक श्रोता अपन धर्मपत्नी श्रीमती रेखा झाक चर्च नै करी। जखन हम गजल लिखै छी तँ पहिने हुनके सुनबैत छियन्हि आ ओहो धैर्यसँ सुनि कऽ ओइपर अपन विचार राखैत छथि आ कएक ठाम शब्द सुधारक अनुशंसा सेहो करैत छथि। हमर बियाहक बीस बर्ख भऽ गेल अछि आ एतेक दिनसँ घरक पूरा भार सम्हारि कऽ जे सहयोग ओ हमरा देने छथि, से हुनकर हमरा लेल अपूर्व प्रेम आ तियागक पहिचान थिक। हमर साहित्य सृजनक प्रेरक वएह छथि। जखन बहुत दिन धरि नब गजल नै लिखै छी, तखन वएह टोकि दैत छथि जे लिखनाइ किअए बन्न कएने छी। हुनकर ई समर्पण आ प्रेमक प्रतिफल हमर गजल छी। हमर गजल यात्रामे हमर तीनू सन्तान, सुश्री आकांक्षा, सुश्री अदिति आ सुश्री पूर्णिमाक योगदान सेहो कम नै अछि। जखन हम लिखैले बैसैत छी, ई तीनू बहिन हमरा कोनो व्यवधान नै करैत छथि आ जखन लिखनाइ परसँ उठैत छी, तकर बादे अपन समस्या आ जरूरतिसँ हमरा अवगत कराबैत छथि। संगहि हमर पोथी छपबाक उत्साह हिनका सभमे देखि हम विह्वल छी। एकर अलावा "विदेह"क सभ मित्र लोकनिक हम सेहो आभारी छी, जे हमर गजल सभपर अपन प्रतिक्रिया दैत रहलाह आ हमरामे उत्तरोत्तर सुधार आनबाक प्रयास करैत रहलाह। हम अपन विभागीय संगी, कर्मचारी आ अधिकारी लोकनिक सेहो आभारी छी, जे कार्यालय अवधिक बाद हमरा कहियो तंग नै कएलथि, जइसँ हमर लिखब सुगम भेल। नौकरीक बीचसँ समए निकालि कऽ लिखि लेनाइ हिनके सबहक सहयोगसँ सम्भव भेल अछि।

हम श्रुति प्रकाशनक सेहो बहुत आभारी छी, जे हमरा सनक नव गजलकारक पोथी छापि रहल अछि। किएक तँ बेनाम आ अनाम लेखकक पोथी छापबाक रिस्क (जोखिम) उठेबाक हिम्मत सभ प्रकाशनमे नै होइत छै।

आब हम गजलक विषएमे किछु विचार अपने सबहक समक्ष राखए चाहै छी। गजल करेजक संवेदनासँ जनमैत अछि। संवेदनहीन करेजसँ गजल निकलनाइ सम्भव नै अछि। संगहि गजलक व्याकरणक जनतब

सेहो परम आवश्यक अछि। कहबाक मतलब ई अछि जे गजल ओ गाड़ी थिक जकर दूटा पहिया छैक, करेजक संवेदना आ गजलक व्याकरण। गजल लिखबामे काफियाक शुद्धता बड्ड महत्वपूर्ण होइत छै। किएक तँ बिना रदीफक गजल तँ लिखल जा सकैए, मुदा बिना दुरूस्त काफियाक गजल नै भऽ सकैए। काफियाक निअम विस्तृत छैक आ ओकर जनतब हमरा कतेक भेल अछि से निर्णए अहाँ सुधी पाठक लोकनि कऽ सकैत छी। काफिया आ रदीफक बाद बहर आबैत अछि। बहरक शास्त्र सेहो बड्ड विस्तृत छै। गजलक व्याकरणक विशद वर्णन श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक मैथिली गजलशास्त्रमे देल गेल अछि। मोटा मोटी बहरकेँ एकटा शृंखला (पैटर्न)क रूपमे बूझल जा सकैए। कहबाक मतलब जे सभ शेरक सभ पाँतिमे एके मात्रा-शृंखलाक पालन हुए, तँ ओ गजल बहरमे कहल जा सकैए। एकर अर्थ ई भेल जे पहिल शेर (मतला) सँ लऽ कऽ मकता धरि जँ एके मात्रा-क्रमक प्रयोग भेल अछि, तँ ओ गजल बहरमे हएत। मतलब पहिल शेरक पहिल पाँतिमे ह्रस्व आ दीर्घक मात्राक प्रयोग जइ क्रममे भेल अछि, जँ ह्रस्व आ दीर्घक मात्रा वएह क्रममे गजलक सभ पाँतिमे अछि तँ ओ गजल बहरमे कहल जाएत। ओना मैथिलीमे आदरणीय गजेन्द्र ठाकुरजीक द्वारा प्रतिपादित सरल वार्णिक बहर, जइमे गजलक प्रत्येक शेरक सभ पाँतिमे वर्णक संख्या समान राखल जाइत अछि, खूब प्रसिद्ध भेल अछि आ नब गजलकारक शुरूआतमे खूब मददगार सिद्ध भेल अछि। हमहूँ सरल वार्णिक बहरमे गजल लिखनाइ शुरू कएने छलौं आ पोथीक बेसी गजल अही बहरमे अछि। अरबी बहरमे सेहो किछु प्रयास कएने छी आ ई प्रयास कतेक सफल भेल, ई अहीं पाठक लोकनि बता सकैत छी। हम ऐ बातक समर्थक छी जे गजलक नीचाँमे अरबी बहरक नाओं वा जँ गजल सरल वार्णिक बहरमे अछि तँ वर्णक संख्या अबस्स लिखबाक चाही। तँए हम सभ गजलक नीचाँमे बहरक नाम वा वर्णक संख्याक उल्लेख कएने छी। हम एखनौं सीखिये रहल छी, तँए बहर, काफिया आ रदीफक दोख किछु ठाम भाइयो सकैए। अहाँ सुधी पाठक लोकनि जँ ऐसँ अवगत कराएब तँ हमरा अतीव प्रसन्नता हएत, किएक तँ हम अपन गल्तीकेँ सुधारैत आगाँ आरो नीक गजल लिखि सकब। संवेदनात्मक रूपमे हम कतेक सफल भेल छी, ईहो निर्णए अहीं सभ कए सकैत छी।

अंतमे अहाँ सबहक आशीर्वादक आकांक्षामे हम गजलक अपन पहिलुक पोथी अहाँ पाठक लोकनिकेँ समर्पित करैत छी।

-ओम प्रकाश

गजल

गजल- १

भीख नै हमरा अपन अधिकार चाही
हमर कर्मसँ जे बनै उपहार चाही

कान खोलि कऽ राखने रहऽ पड़त हरदम
सुनि सकै जे सभक से सरकार चाही

प्रेम टा छै सभक औषध एहिठाँ यौ
दुखक मारल मोनकेँ उपचार चाही

सभ सिहन्ता एखनो पूरल कहाँ छै
हमर मोनक बाटकेँ मनुहार चाही

"ओम" करतै हुनकरे दरबार सदिखन
नेह-फूलसँ सजल ओ दरबार चाही

(बहरे-रमल)

गजल- २

रमजान आ ईदक शुभ अवसरपर प्रस्तुत कऽ रहल छी एकटा गजल।
ऐ गजलक प्रेरणा हम एकटा प्रसिद्ध कव्वालीसँ लेने छी।

मदीनाक मालिक अहाँ ई करा दिअ
करेजा हमर बस मदीना बना दिअ

हमर मोन निश्छल भऽ गमकै धरा पर
कृपा एतबा अपन हमरा पठा दिअ

बनै सगर दुनियाँ खुशी केर सागर
सभक ठोर एतेक मुस्की बसा दिअ

दया केर बरखा करू ऐ पतित पर
मनुक्खक कते मोल हमरा बता दिअ

दहा जाइ दुनियाँ सिनेहक नदीमे
अहाँ "ओम"केँ प्रेम-कलमा पढ़ा दिअ

(बहरे-मुतकारिब)

गजल- ३

प्रस्तुत कऽ रहल छी हम अपन पहिल बाल गजल। ई गजल एकटा बाल मजदूरक पीड़ापर आधारित अछि।

करबा नै मजूरी माँ पढ़बै हमहूँ
नै रहबै कतौ पाछू बढ़बै हमहूँ

हम छी छोट सपना पैघ हमर छै गे
कीनब कार जकरा पर चढ़बै हमहूँ

टूटल छै मड़ैया आस मुदा ई छै
सोना अपन छत कहियो मढ़बै हमहूँ

चारू कात पसरल दुखक अन्हरिया छै
कटतै ई अन्हरिया आ बढ़बै हमहूँ

पढ़ि-लिख खूब सबतरि नाम अपन करबै
जिनगी "ओम" सुन्नर ई गढ़बै हमहूँ

(मफऊलातु-मफाऊलातु-मफाईलुन)

गजल- ४

कहू की कियो बूझि नै सकल हमरा
हँसी सभक लागल बहुत ठरल हमरा

कियो पूछलक नै हमर हाल एतय
कपारे तँ भेटल छलै जरल हमरा

करेजासँ शोणित बहाबैत रहलौं
विरह-नोर कखनो कहाँ खसल हमरा

तमाशा बनल छी अपन फूँकि हम घर
जरैमे मजा आबिते रहल हमरा

रहल "ओम" सदिखन सिनेहक पुजारी
इ दुनियाँ तँ 'काफिर' मुदा कहल हमरा

(बहरे-मुतकारिब)

गजल- ५

तकियो कनी कानैए उघारल लोक
गाड़ब कते दुखमे बड़ड गाड़ल लोक

धरले रहत सभ हथियार शस्त्रागार
बन्लै मिसाइल भूखे झमारल लोक

छै भरल चिनगीये टा करेजा जरल
अहुँकेँ उखाडत सभठाँ उखाड़ल लोक

लोकक बले राजभवन इ गेलौं बिसरि
खाली करू आबैए खिहारल लोक

माँगी अहाँ "ओम"क वोट मुस्की मारि
पटिया सक्त नै एतय बिसारल लोक

(बहरे-सलीम)

गजल- ६

नैनक छुरी नै चलाबू यै सजनियाँ
कोना कऽ जीयब बताबू यै सजनियाँ

नै चोरि केलौं किया डरबै हम-अहाँ
सुन्तै जमाना सुनाबू यै सजनियाँ

छी हम पियासल अहाँ प्रेमक धार छी
आँजुरसँ हमरा पियाबू यै सजनियाँ

बेथा करेजक किया नै सुनलौं अहाँ
हमरासँ नेहा लगाबू यै सजनियाँ

छटपट करै प्राण तकियो एम्हर अहाँ
"ओम"क करेजा जुड़ाबू यै सजन्याँ

(बहरे-सगीर)

गजल- ७

मोनक आस सदिखन बनि कऽ टूटैत अछि
किछु एना कऽ जिन्गी हमर बीतैत अछि

मेघक घेरमे भेलै सुरूजो मलिन
ऐ पर खुश भऽ देखू मेघ गरजैत अछि

हम कोना कऽ बिसरब मधुर मिलनक घडी
रहि-रहि यादि आबै मोन तड़पैत अछि

देखै छी कते प्रलाप बिन मतलबक
चुप अछि ठोढ़ बाजै लेल कुहरैत अछि

मुट्ठीमे धरै छी आगि दिन-राति हम
जिदमे अपन "ओम"क हाथ झरकैत अछि

(बहरे-कबीर)

गजल- ८

जीनाइ भेलै महँग एतय मरब सस्त छै
महँगीक चाँगुर गड़ल जेबी सभक पस्त छै

जन्ता ढुकै भाँड़मे चिन्ता चुनावक बनल
मुर्दा बनल लोक नेता सभ कते मस्त छै

किछु नै कियो बाजि रहलै नंगटे नाच पर
बेमार छै टोल लागै पीलिया ग्रस्त छै

खसि रहल देबाल नैतिकताक नित बाटमे
आनक कहाँ लोक अपने सोच मे मस्त छै

चमकत कपारक सुरूजो आस पूरत सभक
चिन्तित किया "ओम" रहतै भेल नै अस्त छै

(बहरे-बसीत)

गजल- ९

धारक कात रहितो पियासल रहि गेल जिनगी हमर
मोनक बात मोनहि रहल दुख सहि गेल जिनगी हमर

मुस्की हमर घर आस लेने आओत नै आब यौ
पूरै छै कहाँ आस सबहक कहि गेल जिनगी हमर

सीखेलक इ दुनियाँ किला बचबै केर ढंगो मुदा
बचबैमे किला अनकरे टा ढहि गेल जिनगी हमर

पाथर बाट पर छी पड़ल हमरा पूछलक नै कियो
कोनो बन्न नाला जकाँ चुप बहि गेल जिनगी हमर

जिनगी "ओम" बीतेलकै बीचहि धार औनाइते
भेटल नै कछेरो कतौ बस दहि गेल जिनगी हमर

(बहरे मुक्तजिब)

गजल- १०

करेज घँसैसँ साजक राग निखरै छै
बिना धुनने तुरक नै ताग निखरै छै

अहाँ मस्त अपनेमे आन धिपल दुखसँ
जँ लोकक दर्द बाँटब लाग निखरै छै

इ दुनियाँ मेहनतिक गुलाम छै सदिखन
बहै घाम जखन सुतल भाग निखरै छै

हक बढै केर छै सबहक इ नै छीनू
बढ़त सभ गाछ तखने बाग निखरै छै

कटऽ दियौ "ओम"क मुड़ी आब दुनियाँ ले
जँ गाम बचै झुकैसँ तँ पाग निखरै छै

(बहरे-हजज)

गजल- ११

कहैए राति सुनि लिअ सजन आइ अहाँ तँ जेबाक जिद जूनि करू
इ दुनियाँक डर फन्दा बनल इ बहाना बनेबाक जिद जूनि करू

अहाँ बिन सून पड़ल भवन बलम रूसल किया हमरासँ हमर मदन
अहाँ नै यौ मुरूत बनि कऽ रहू हमरा हरेबाक जिद जूनि करू

इ चानक पसरल इजोत नस-नसमे ढुकल मोनक नेह छै जागल
सिनेहसँ सींचल हमर नयन कहल अहाँ कनेबाक जिद जूनि करू

अहाँ प्रेम हमर जुग-जुगसँ बनल हम खोलि कहब अहाँसँ कहिया धरि
अहाँ संकेत बूझू सदिखन इ गपकेँ कहेबाक जिद जूनि करू

कहै छै मोन "ओम"क पाँति भरल प्रेमसँ सुनि अहाँ चुप किया छी
इ नोत कते हम पठैब उनटा गंगा बहेबाक जिद जूनि करू

(बहरे-हजज)

गजल- १२

हमर मुस्कीक तर झाँपल करेजक दर्द देखलक नहि इ जमाना
सिनेहक चोट मारूक छल पीड़ा जकर बूझलक नहि इ जमाना

हमर हालत पर कहाँ नोर खसबैक फुरसति ककरो रहल कखनो
कहैत रहल अहाँ छी बेसम्हार मुदा सम्हारलक नहि इ जमाना

करैत रहल उघार प्रेमक इ दर्द भरल करेज हमरा सगरो
हमर घावक तँ चुटकी लैत रहल कखनहुँ झाँपलक नहि इ जमाना

मरूभूमि दुनियाँ लागैत रहल सिनेहक बिला गेल धार कतौ
करेज तँ माँगलक दू ठोप टा प्रेमक किछ सुनलक नहि इ जमाना

कियो "ओम"क सिनेहक बूझतै कहियो सनेस पता कहाँ इ चलै
करेजक हमर टुकडी छींटल मुदा देखि जोड़लक नहि इ जमाना

(बहरे-हजज)

गजल- १३

कतौ बैसारमे जँ अहाँक बात चलल
तँ हमर करेजमे ठंढा बसात चलल

विरह देख हमर झरल पात सभ गाछसँ
सनेस प्रेमक लऽ गाछक इ पात चलल

मदन-मुस्कीसँ भरल अहाँक अछि चितवन
करेजक दुखक भारी बोझ कात चलल

बुझाबी मोनकेँ कतबो इ नै मानै
अहीं लेल सभ आइ धरि शह-मात चलल

छल घर हमर इजोतसँ भरल जे सदिखन
जखन गेलौं अहाँ, "ओम"क परात चलल

(बहरे हजज)

गजल- १४

किछ हमर मोन आइ बस कहऽ चाहैए
अहींक बनि कऽ सदिखन तँ इ रहऽ चाहैए

इ लाली ठोरक तँ अछि जानलेवा यै
अछि इ धार रसगर संग बहऽ चाहैए

अहाँ काजर लगा कऽ अन्हार केने छी
बरखत सिनेह घन कखन दहऽ चाहैए

अहाँ फेकू नहि इ मारूक सन मुस्की
बिना मोल हमर करेज ढहऽ चाहैए

बिन अहाँ "ओम"क सुखो छै दुख बरोबरि
सभ दुख अहाँक इ करेज सहऽ चाहैए

(बहरे-हजज)

गजल- १५

मधुर साँझक इ बाट तकैत कहुना कऽ जिनगी बीतैत रहल हमर
पहिल निन्नक बनि कऽ सपना सदिखन इ आस टा टूटैत रहल हमर

कछेरक नाव कोनो हमर हिस्सा मे कहाँ रहल कहियो कखनो
सदिखन इ नाव जिनगीक अपने मँझधार मे डूबैत रहल हमर

करेज हमर छलै झाँपल बरफसँ किये कहाँ देखलक अंगोरा
इ बासी रीत दुनियाँक बुझि कऽ करेज न्हुँ न्हुँ सुनगैत रहल हमर

रहैए चान आकाश कखनो उतरल कहाँ आंगन हमर देखू
जखन देखलक छाहरि चान मोन तँ ओकरे बूझैत रहल हमर

अहाँ कहने छलौं जिनगीक निर्दय बाटमे संग रहब हमर यौ
अहाँक गप हम बिसरलहुँ नहि मोन रहि रहि ओ छूबैत रहल हमर

(बहरे-हजज)

गजल- १६

चलल बाण एहन इ नैनक अहाँक मरलौं हम।
सुनगल इ करेज हमर सिनेहसँ बस जरलौं हम।

भिड़त आबि हमरासँ औकाति ककरो कहाँ छै
जखन-जखन लडलौं हरदम अपनेसँ लडलौं हम।

हम उजड़ल बस्ती बनल छी अहाँक इ सिनेह सँ
सिनेहक नगर मे सदिखन बसि-बसि उजडलौं हम।

हम तँ देखबै छी अपन जोर मुँहदुब्बरे पर
कियो जँ कमजोर छल पीचि कऽ बहुत अकड्लौं हम।

अहाँ डरि-डरि कऽ देखलौं जाहि धार दिस सुनि लिअ
सभ दिन उफनल एहने धारमे उतरलौं हम।

(बहरे-मुतकारिब)

गजल- १७

अहाँकेँ हमर इ करेज बिसरत कोना।
छवि बसल मोनमे आब झहरत कोना।

हवा सेहो सुगंधक लेल तँ जरूरी
बिन हवा फूलक सुगंध पसरत कोना।

अहीं टा नै इ दुनियाँ छै पियासल यौ
बिन बजेने इ चान घर उतरत कोना।

जवानी होइ ए नाव बिन पतवारक
कहू पतवारक बिना इ सम्हरत कोना

हमर मोन ककरो लेल पजरै नैए
बनल छै पाथर करेज पजरत कोना।

(बहरे-हजज)

गजल- १८

अन्हारक की सुख बुझथिन इ इजोतक गाममे सदिखन रहै वाला।
दुखेकेँ सुख बना लेलक करेजक घातक दुख चुपे सहै वाला।

जमानाक नजरिक खिस्सा बनलए आब तँ करेज हमर सुनू यौ
हुनकर नजरि कहाँ देखलक हमर करेजक इ शोणित बहै वाला

कहै छै लाजक नुआमे मुँह नुकौने रहल दुनियाँक डर सँ अपन,
इ रीत अछि दुनियाँक तँ एतऽ किछसँ किछ कहबे करतै कहै वाला

करू नै प्रकट अपन सिनेह मोनक यैह हमरा ओ कहैत रहल
किया हम राखब उठाकेँ समाजक जर्जर रिवाज इ ढहै वाला।

अहाँ डेग अपन उठेबे करब कहियो हमर मोनक दुआरि दिसक
बहुत "ओम"क बहल नोर दुखक गरम धारमे गाम इ दहै वाला।

(बहरे-हजज)

गजल- १९

कुशल आबि देख लिअ एतऽ सभटा आँखि नोरसँ भरल छै।
विकास कतऽ भेलै विकासक दिस इ बाट चोरसँ भरल छै।

चिड़ै सभ कतौ गेल की मोर घूमैत अछि गाम सगरो
इ बगुला तँ पंख अछि रंगि कऽ सभा वैह मोरसँ भरल छै।

सभ नजरि पियासल छल तकैत आकाश चान्क दरसकँ
निकलतै इ चान कहिया आसक धरा चकोरसँ भरल छै।

उजाही उठल गाममे नै कनै छै करेज ककरो यौ
हमर गाम एखनहुँ खुश गीत गाबैत ठोरसँ भरल छै।

कहै छल कियो गौर वर्णक गौरवक एहन अन्हार इ
सभ दिस तँ अछि स्याह मोन जखन इ भूमि गोरसँ भरल छै।

(बहरे-मुतकारिब)

गजल- २०

कहि कऽ नै मोनक हम तँ बड़ड भेल तबाह छी बाबू।
कह्ब जे मोनक अहीं बाजब हम बताह छी बाबू।

हुनकर गप हम रहलौं जे सुनैत तँ बनल नीक छलौं
गप हुनकर हम नै सुनल कहथि हम कटाह छी बाबू।

सदिखन रहलथि मूतैत अपने आगि सभकेँ दबने
हम कनी डोलि गेलौं ओ कहै अगिलाह छी बाबू।

बनल छल काँचक गिलास हुनके मोनक विचार सुनू
इ अनघोल सगरो भेलै हम तँ टुनकाह छी बाबू।

सचक रहि गेल नै जुग सच कहि कऽ हम छी बनल बुरबक
गप कहल साँच तँ अहीं कह्ब "ओम" धराह छी बाबू।

(बहरे-हजज)

गजल- २१

टूटि-टूटि कऽ हम तँ जोड़ाइत रहै छी।
मोनक विचार सुनि पतियाइत रहै छी।

गौखे आन्हर पड़ल अपने घरारी
सदिखन मुँह उठा कऽ अगधाइत रहै छी।

हाटमे प्रेमक खरीद करै सभ किया
बूझि नै आब तँ हम बिकाइत रहै छी।

फहरतै झंडा हमर सभ दिस हवामे
एहि आसेँ खूब फहराइत रहै छी।

"ओम"क कपार पर कानि कऽ की करत ओ
फूसियों हम ताकि औनाइत रहै छी।

(बहरे-रमल)

गजल- २२

जन-गणक सेवक भेल देशक भार छै
जन्ताक मारि टका बनल बुधियार छै

चुप छी तँ बूझथि ओ अहाँ कमजोर छी
मुँह ताकला सँ कहाँ मिलल अधिकार छै

बिन दाम नै वर केर बाप ह्लैत अछि
घर मे गरीबक सदिखने अतिचार छै

हक नै गरीबक मारियौ सुनि लियऽ अहाँ
जरि रहल पेटक आगि बनि हथियार छै

झरकल सिनेहक बात "ओम"क की कहू
सगरो पसरल जरल हँसी भरमार छै

(बहरे-कामिल)

गजल- २३

आबि गेलै बहुत मस्ती थोड़बे पीबि कऽ।
आब डोलै सगर बस्ती थोड़बे पीबि कऽ।

जे करी की करत थौआ भेल छै लोकक
खूब हेतै जबरदस्ती थोड़बे पीबि कऽ।

चोरबाकेँ चलल डंटा साधु बैसै चुप
हैत आगू मटर-गश्ती थोड़बे पीबि कऽ।

बाजबै जे मुँहक छै चाहे कहू मातल
की कहू छै मुँहक सस्ती थोड़बे पीबि कऽ।

आब नेता बनि खजाना लूटबै देशक
"ओम"केँ की बढ़ल हस्ती थोड़बे पीबि कऽ।
------------ वर्ण १५ ---------------
वर्ण क्रम I U I I U U U I I I U I I U U

गजल- २४

मुस्कीसँ झाँपि रखने छी जरल करेज अपन।
सभसँ नुकेने छी दुख भरल करेज अपन।

दिल्लगी करै लेल चाही एकटा जीबैत करेज
ककरा परसिऐ हम मरल करेज अपन।

मोहक जुन्नामे बान्हल हम जोताईत रहै छी
देखैत रहै छी मायामे गड़ल करेज अपन।

कियो देखै नै तैं केने छी करेजकँ तालामे बन्न
देखबिऐ ककरा आब डरल करेज अपन।

कोनो गप पर नै चिहुँकै आब करेज "ओम"क
अपनेसँ हम घोंटै छी ठरल करेज अपन।

वर्ण १८ --------------

गजल- २५

भूखल पेटक गणितमे ओझराएल लेल ज्ञान की
गरीबक सभ दिन एक्के मोहर्रम की रमजान की

आँखिमे सपना लेने मरै बला लोकसँ जा कऽ पूछियौ
ओकरा लेल की मंदिर-मस्जिद पूजा आर अजान की

दैव-दैव कोढ़िया चिचियाबैत हाथ पएर मोडने
अपन मेहनति पर जीबू चढै लेल आसमान की

जिनगी भरि भरै छी पापक पेटी खूब जोगाड़ लगा
पाप नै कखनो पाछाँ छोडत हैत केने गंगा-स्नान की

मनुक्ख-मनुक्खमे अंतर करै ओ धर्म नै हमर छी
"ओम" लेल छै सभ बरोबरि हिन्दू की मुसलमान की

वर्ण २० --------------

गजल- २६

कखनो छूबि दियौ ह्मरो फुलवारीक फूल बूझि कऽ।
किया केने छी यै कात हमरा करेजक शूल बूझि कऽ।

हमरासँ नीक झूलनियाँ जे बनल अहाँक सिहन्ता
हमरो दिस फेरू नजरि झूलनियाँक झूल बूझि कऽ।

अहाँक नैनक मस्ती बनल प्रेमक पोथी सभ लेल
हमहुँ पढ़ब प्रेम-पाठ अहाँसँ इसकूल बूझि कऽ।

बहुत प्रेमक पवित्र धार करेज बनत संगम
प्रेम छै पूजा नै छोड़ू एकरा जिनगीक भूल बूझि कऽ।

प्रेमक घर अहाँक अछि किया फूजल केवाड़ी बिना
ठोकि लियौ "ओम"क प्रेम ओहि केवाड़ीक चूल बूझि कऽ।

वर्ण २० ----------------------

गजल- २७

हम सभ पूछी अहाँसँ एकेटा सवाल किछ बाजू ने।
अहाँ केलिऐ किया देशक एहेन हाल किछ बाजू ने।

आसक धारमे हेलैत मनुक्खक कोनो हेतै कछेर
आस पूरत कहियो एतै एहन साल किछ बाजू ने।

भूखल आँखिक नोर सुखाकेँ बनि गेल अछि यौ नून
वादाक अचार चटा करब कते तल किछ बाजू ने।

कदम ताल करैसँ कतौ देशक भ्रष्टाचार मेटेतै
गुमस बेसी हेतै तँ भऽ जैत यौ बवाल किछ बाजू ने।

राशन होय की शासन अहाँ सभठाँ पेंच लगौने छी
कर जोड़ि कहैए "ओम" तोड़ू इ जंजाल किछ बाजू ने।

वर्ण २० -------------------

गजल- २८

जिनगीक गीत अहाँ सदिखन गाबैत रहू।
एहिना इ राग अहाँ अपन सुनाबैत रहू।

ककरो कहैसँ कहाँ सरगम रूकै कखनो
कहियो कियो सुनबे करत बजाबैत रहू।

खनकैत पायल रातिक तड़पाबै हमरा
हम मोन मारि कते दिन धरि दाबैत रहू।

हमरा कहै छथि जे फुरसति नै भेटल यौ
घर नै अहाँ कखनो सपनहुँ आबैत रहू।

सुनियौ कहै इ करेजक दहकै भाव कनी
कखनो तँ नैनसँ देखि हिय जुराबैत रहू।

- वर्ण १७ --------------

गजल- २९

पेटक आगि मिझबै लेल मायकँ जान बेचैत देखलौं
बहकल मोनक पाछाँ लोककँ ईमान बेचैत देखलौं

ईमान धरम त्यागक खिस्सा आब पोथीक गप भेल छै
रक्षाक सप्पत खाऽ कऽ ककरो हिन्दुस्तान बेचैत देखलौं

धरती पर भेल अछि लोकक ठेलमठेल सबतरि
खाली जमीने नै इंटरनेट पर चान बेचैत देखलौं

लादि कऽ भरल बस्ता आब नेना भुटका बूढ़ भऽ जाइए
भेटैए कहाँ नेनपनक मधुर गान बेचैत देखलौं

रेडिमेडक जुगमे हँसी भेट जाइए रेडीमेड आब
छगुनता लागै "ओम"कँ जे मुस्कीक थान बेचैत देखलौं

वर्ण २१ --------------------

गजल- ३०

चमकल मुख अहाँक इजोर भऽ गेलै
अधरतिए मे लागै जेना भोर भऽ गेलै

काजर बूझि हमरा नैन मे बसा लिअ
अहाँक नैना मारूक चितचोर भऽ गेलै

कुचरै कौआ रहि रहि मोर आंगन मे
जानि अबैया अहाँक मोन मोर भऽ गेलै

नैनक इशारा दैए प्रेमक निमन्त्रण
आब लाजे कठुआ कऽ बन्न ठोर भऽ गेलै

बन्नल नाम अहींक "ओम"क प्राण-डोरी
अहाँक आस मे करेज चकोर भऽ गेलै

(सरल वार्णिक- १५ वर्ण)

गजल- ३१

करेजमे काढ़ल छै अहाँक छवि नै मेटैत कखनो।
मोनमे बन्न अहाँक प्रेम कियो कोना चोरैत कखनो।

अहाँ खुश रहू यैह छै आब हमर दर्दक इलाज
इ दर्द फुरसतिमे हमर करेज सुनैत कखनो।

असगर बैसल अहाँक यादिमे हम हँसि लैत छी
हँसीक राज भेटलासँ हमर मोन बतैत कखनो।

मोनमे बसल अहाँक छवि नै भीजै तैं नै कानैत छी
मुदा रोकी कते अहाँक यादि हमरा कनैत कखनो।

एक बेर कहि दितिये अहाँ हमरे लेल बनल छी
गीत प्रेमक "ओम"क मोन हँसि गुनगुनैत कखनो।

-------- सरल वार्णिक बहर वर्ण २० ----------

गजल- ३२

केहन मीठ विरहमे झोरि गेलौं अहाँ हमरा।
नोरक झोर विकट छै बोरि गेलौं अहाँ हमरा।

नीक कहै छल सभठाँ फूल भेटै छलै सगरो
आब कहै हम वहशी घोरि गेलौं अहाँ हमरा।

लोक बजै छल हमरा प्रेममे जोड़ि देल अहाँ
टूटल टाट बनल छी तोड़ि गेलौं अहाँ हमरा।

देल करेज अपन सौंसे अहाँ केर हाथ प्रिये
सौंस करेजक टुकडी छोड़ि गेलौं अहाँ हमरा।

"ओम"क मोन बुझलकै नै बनेलौं अहाँ घिरनी
नाच करी बनि घिरनी गोड़ि गेलौं अहाँ हमरा।

---------------- वर्ण १८ ---------------

गजल- ३३

नबका बर्खक नब उमंग सगरो छै।
खुशी जतबा ओम्हर ओतबा एम्हरो छै।

बर्ख-बर्खसँ दुखसँ छौंकल सभ आत्मा
हेतै तृप्त जरूर इ उमेद हमरो छै।

नब बर्ख बनै प्रेम-नाव दुख-धारमे
सभ प्रेम करू बिसरू कोनो झगड़ छै।

बन्न करियौ नै उत्सव ऊँच अटारीमे
असंख्य भूखल आँखि सिहन्ता ओकरो छै।

असल आजादी भेटै यैह "ओम"क दुआ
बिला जाइ भ्रष्ट आचरण जे ककरो छै।

-------------- वर्ण १५ ------------

गजल- ३४

मोनक मोनसँ चलिकऽ केहेन हाल केने छी।
प्रेममे अपन जिनगी हम बेहाल केने छी।

करेज हमर छल उद्‌गम प्रेमक गंगाकँ
विरह-नोरमे सानि करेजकँ थाल केने छी।

जकर प्रेम-ताल पर हम नाचैत रहलौं
हमरा वैह कहै छै एना किया ताल केने छी।

एके बेर हरिकऽ प्राण झमेला खतम करू
जे बेर-बेर आँखिक छुरी सँ हलाल केने छी।

अहाँक मातल चालिसँ "ओम"क मोन मतेलै
ऐमे दोख हमर की अहाँ आँखि लाल केने छी

--------------- वर्ण १७ ----------------

गजल- ३५

टुकडी-टुकडीमे जिन्गी बीताबैत रहलौं
सुन्लक नै कियो जे बेथा सुनाबैत रहलौं

अपन आ आनक भेद इ दुनियाँ बुझौलक
इ भेद सदिखन मोनकेँ बुझाबैत रहलौं

ऐ मोनमे पजरल आगि धधकैत रहल
हम पेटमे लागल आगि मिझाबैत रहलौं

अपन अटारी सभसँ सुन्नर बनाबै लेल
कोन-कोन नै जोगाड़ हम लगाबैत रहलौं

दुनियाँक खेलामे "ओम" बनऽ चाहल मदारी
बनि गेलौं जमूरा सभकेँ रीझाबैत रहलौं

------------- वर्ण १७ -------------

गजल- ३६

आकाश बड्ड छै शांत भरिसक बिहाड़ि आबै छै
ओंघरैत सभ एहिमे बलौं ओहार ओढ़ाबै छै

पोछि दियौ झहरैत नोर अहाँ निशब्द आँखिक
आँखिक नोर थीक लुत्ती झटसँ आगि लगाबै छै

चिन्है छै सभ ओकरा कतेक स्वाँग रचेतै आब
तखनो ओ सभकेँ बिपटा बनि नाच देखाबै छै

नंगटे भेल छै तखनो कुर्सीक मोह नै छूटल
कुर्सीक इ सौख ओकरा किछसँ किछ कराबै छै

रोकि सकै छै कियो नै सागरमे जौं उफान एलै
परतारै लेल देखियौ माटिक बान्ह बनाबै छै

-------------- वर्ण १८ ----------------

गजल- ३७

बनि जेतै घर एखन धरि जे छै हमर मकान प्रिये
घोरि दितिऐ हमर प्रेममे अहाँ अपन जौं प्राण प्रिये

एक मीसिया इजोत चानक चमकाबै छै पूरा दुनियाँ
अहाँ बिन अछि घर अन्हार छत जकर छै चान प्रिये

आँखि मुनल हमर जरूर छै मुदा हम छी नै सूतल
अहाँक प्रेमक वाहक मुस्की दिन-राति लैए जान प्रिये

कखनो देखाबी प्रेम अहाँ बनै छी कखनो अनचिन्हार
प्रेमक खेलमे अहाँक नुका-छिपी केनेए हरान प्रिये

जिनगीक रौदी छै प्रचण्ड शीतल अहाँक केशक छाह
विश्राम ओहि छाहमे करै ले डोलै "ओम"क ईमान प्रिये

------------------- वर्ण २१ ------------------

गजल- ३८

डूबैत रहलौं हरदम हम आर कहिया धरि इ अन्हेर हेतै
खाली मझधारे नै हेतै कपार हमर हमरो कोनो कछेर हेतै

सभ लेल बाँतर कात राखल छी कियो तँ कखनो ताकत एम्हरो
खूब गजल सभ ले कहल गेल हमरो लेल ककरो 'शेर' हेतै

सुख-दुख जीवन-क्रममे लागल कखनो मीठ कखनो तीत भेटै
बड्ड अन्हरगर साँझ भेलै कहियो इजोत भरल सबेर हेतै

सभ मिल भिड़ल छै माथापच्ची केने एकटा कानून बनबै लेल
केहनो कानून बनि जाओ मुदा ओहिमे संशोधन बेर-बेर हेतै

आब नै लुटेतै देशक वैभव नै कऽ सकतै खजानाकेँ चोरी कियो
सोनक चिड़ै छल देश हमर पुरना वैभव वापस फेर हेतै

------------------ वर्ण २५ ----------------------

गजल- ३९

सदिखन स्वार्थक चिन्तन करैत रहैए मोन हमर
इ गप नै बूझि जाइ कियो डरैत रहैए मोन हमर

अपन खेतक हरियरी बचा कऽ रखबाक जोगारमे
आनक जरल खरिहानो चरैत रहैए मोन हमर

विचार अपन गाड़ने दोसरक छाती पर खाम जकाँ
इ खाम उखडबाक डरे ठरैत रहैए मोन हमर

हृदयक भाव अछि तरंगहीन पोखरिक पानि भेल
गन्हाईत जमल भावसँ सड़ैत रहैए मोन हमर

अन्तर्विरोधक द्वन्द्व युद्धमे बाझल अछि "ओम"क मोन
अपनाकेँ जीयेबाक लेल मरैत रहैए मोन हमर

------------------ वर्ण २१ ------------------

गजल- ४०

ओकर गाँधी-टोपी कतौ हरेलै आब ओ हमरे टोपी पहिराबै छै
सेवकसँ बनि बैसलै स्वामी हमरे छाती पर झण्डा फहराबै छै

चुनाव-कालमे मुस्की दऽ हमर दरबज्जाक माटि खखोरलक जे
भेँट भेला पर परिचय पूछै देखियो कतेक जल्दी बिसराबै छै

दंगा भेल वा बाढ़ि-अकाल सभमे मनुक्खक दाम तय करैवाला
पीड़ाक ओ मोल की बूझतै जे मौका भेटते कुहि-कुहि कुहराबै छै

जनताक तन नै झाँपल पेटक आँत सटकि कऽ पीठमे सटल
वातानुकूल कक्षमे रहै वाला फूसियों कानि कऽ नोर झहराबै छै

डारि-डारि पर उल्लू बैसल सौंसे गाम बेतालक नाच पसरलै
एखनो आसक छोट किरण "ओम"क मोनमे भरोस ठहराबै छै

---------------------- वर्ण २५ ---------------------

गजल- ४१

अन्हरिया रातिमे सँ भोर कखनो निकलबे करतै
दुखक अनन्त मेघकेँ चीर सुरूज उगबे करतै

सभ फूल बागक झरि गेल सुखाकऽ एकर की चिन्ता
नब कोढी फूटलै कहियो सुवास पसरबे करतै

टूटल प्याली पर कहाँ कानैत छै मय आ मयखाना
प्याली फेर कीनेतै मयखानामे मस्ती रहबे करतै

सागरमे सदिखन बिला जाइत छै धारक अस्तित्त्व
तैं की धार रूकै छै बिन थाकल देखू बहबे करतै

काल्हि "ओम"क नाम लेबाक ककरो फुरसति नै हेतै
आइ कान किछ ठोढ़सँ हमर नाम सुनबे करतै

---------------- वर्ण २० ----------------

गजल- ४२

हमर छोटका बाबा (हमर पितामहक अनुज) ८८ बरखक अवस्थामे स्वर्गवासी भऽ गेलाह। हुनकर स्मृतिमे हम अपन भावांजलि ऐ गजलक माध्यमे प्रकट कऽ रहल छी।

सभ कहैए पंचतत्वमे आइ अहाँ विलीन भऽ गेलौं
हम निशब्द भेल ठाढ़ छी देखियौ वाणी-हीन भऽ गेलौं

नब वस्त्र पहीरि अहाँ कोन जतरा पर निकललौं
बाट जोहैत छी एखनो अपस्याँत राति-दिन भऽ गेलौं

अंगुरी अहाँक पकड़ि बाध-बोन हम घूमैत छलौं
आब कहाँ ओ अंगुरी हम बाट नापि अमीन भऽ गेलौं

जेनाई छल निश्चित यौ दिन तकेने अजुके छलिऐ
बंधन कोनाकऽ तोडलिऐ कानैत आब बीन भऽ गेलौं

चिंतित "ओम"क तन्नुक कन्हा आब कोना बोझ उठेतै
गेल आब अहाँक छाहरि हम छत-विहीन भऽ गेलौं
------------------ वर्ण २० ------------------

गजल- ४३

कोनो खसैतकेँ जे लिऐ सम्हारि यैह थीक जिनगी
डूबैतकेँ जौं दियौ पार उतारि यैह थीक जिनगी

भाव कोनो हुए मोनमे शब्द होइत छै संवाहक
जे बाजैसँ पहिने लेब विचारि यैह थीक जिनगी

मान-अपमान दुनू भेटै छै इ मायाक थीक लीला
अन्यायकेँ सदिखन दी मोचाड़ि यैह थीक जिनगी

भाँति-भाँतिकेँ मेघ विचारक मोनक भीतर घूमै
सुविचारसँ राखू मोन पजारि यैह थीक जिनगी

आन दिस अपन काँच अंगुरी कोना उठेतै "ओम"
पहिने लितौं अपनाकेँ सुधारि यैह थीक जिनगी
---------------- वर्ण १९ ----------------

गजल- ४४

अपने खोजमे अपन मोन हम धुनैत रहै छी
छिड़िऐल मोती आत्माक सदिखन चुनैत रहै छी

आनक की बनब एखन धरि अपनहुँ नै भेलौं
मोन मारिकऽ सभ गप पर आँखि मुनैत रहै छी

कहियो भेटबे करतै आत्माक गीत एहि प्राणमे
छाउर भेल जिनगीकेँ यैह सोचि खुनैत रहै छी

झाँपै लेल भसिऐल जिनगीक टूटल धरातल
सपनाक नबका टाट भरि दिन बुनैत रहै छी

बूझि सोहर-समदाउन जिनगीक सभ गीतकेँ
मोन-मगन भेल अपनेमे हम सुनैत रहै छी
--------------- वर्ण १९ ---------------

गजल- ४५

हेतै की आब बूझाय नै एहि देशमे
देश फँसल अछि घोटाला आ केसमे

कोनाकऽ बचायब आब घर चोरीसँ
फिरै छै चोर सगरो साधुक भेषमे

जरै छै गाम तखनो बंसी बजाबै ओ
बूझै नै लिखल देबालक सनेसमे

शिकारी मनुक्खक बनल छै मनुक्खे
गोंतै छै सभ बाट आ घरो कलेशमे

बेईमानीक पताका फहरै आकाश
पाकै ईमान आब पसरल द्वेषमे
---------- वर्ण १४ ------------

गजल- ४६

हम तँ केने बहाना राम केर अहींक नाम लैत छी
बनि गेलौं हम चर्चा गाम केर अहींक नाम लैत छी

रखने छी करेजसँ सटाकऽ यादि अहाँक सदिखन
हमरा काज की ताम-झाम केर अहींक नाम लैत छी

ताकि दितिये कनी नजरिसँ मुस्कीयाकऽ जे एक दिन
काज पड़ितै नै कोनो जाम केर अहींक नाम लैत छी

हमर काशी मथुरा काबा सभ अहींमे अछि बसल
जतरा भऽ गेल चारू धाम केर अहींक नाम लैत छी

रोकि सकतै नै जमाना इ मोनसँ मोनक मिलनाई
मोन कहाँ छै कोनो लगाम केर अहींक नाम लैत छी
------------------- वर्ण २० -----------------

गजल- ४७

देखि हुनकर असल रंग भक हमर टूटि गेल
पोखरिमे सभ नंग-धडंग भक हमर टूटि गेल

सभ आँखिक नोर सुखायल आगि एहेन छै लागल
देखिकऽ कानैत यमुना-गंग भक हमर टूटि गेल

बूझलौं अपनाकेँ कफरगर एकटा संगी भेटल
छोड़ि देलक ओ जखन संग भक हमर टूटि गेल

कते बियोंत लगाबै छलौं अहाँकेँ अंग लगाबै लेल
जखन लगेलौं अंगसँ अंग भक हमर टूटि गेल

मस्तीक नाव भसिया गेल छै समयक ऐ प्रवाहमे
छलौं यौ हमहुँ मस्त-मलंग भक हमर टूटि गेल
--------------- वर्ण २० -----------------

गजल- ४८

हमरासँ की नै करेलक सिहन्ता हमर
सदिखन खाली कनेलक सिहन्ता हमर

अहाँ भेटतौं से हमर कहाँ इ भाग्य छलै
मुदा अहीं दिस बढेलक सिहन्ता हमर

सुरूजक आगिसँ बचू यैह जमाना कहै
बाट सुरूजक धरेलक सिहन्ता हमर

चान मुट्ठीमे बन्न कैल ककरोसँ नै भेलै
हमरा यैह नै सिखेलक सिहन्ता हमर

"ओम"क सिहन्ता जेना कतौ मरि-हरि गेलै
सभटा सिहन्ता जरेलक सिहन्ता हमर
-------------- वर्ण १६ --------------

गजल- ४९

आउ मजा लियऽ शुरू फेर खेल भऽ गेलै
देखू खेलनिहार सभमे मेल भऽ गेलै

कोनो निअम-निष्ठाक जरूरति नै एतऽ
कोनो दोगसँ ढुकु ठेलम-ठेल भऽ गेलै

जकरा किछ लागल नै हाथ हल्ला करै
जे लेलक मजा ओकरा तँ जेल भऽ गेलै

टिकट बाँटै आ काटै केर कबड्डी शुरू
चुनाव भेलै नै जेना कोनो रेल भऽ गेलै

जीतला पर सुन्नर कोठा-गाड़ी भेटत
बाटक इ धूरि जनताक लेल भऽ गेलै
------------- वर्ण १५ ------------

गजल- ५०

वाह कतेक मजा अबै छै उठा-पटकमे
नब-नब दाँव देखबै छै उठा-पटकमे

सभक मुँह भेलै लाल-लाल कुश्ती लड़ैत
सभ जोर कते लगबै छै उठा-पटकमे

छै के संगी कँ शत्रु बनल इ पता नै चलै
छै अपन मुदा खसबै छै उठा-पटकमे

प्राण हतने कोना सभ भिड़ल छै देखियो
किओ माल देखू बनबै छै उठा-पटकमे

ककरो हारि गेलासँ बन्न नै भेल दंगल
हारि झट मुँह उठबै छै उठा-पटकमे
----------- वर्ण १६ ---------------

गजल- ५१

पता नै कोन आगिमे जरैत रहल करेज हमर
पानि नै खाली घीए टा चाहैत रहल करेज हमर

आनक मरल आत्माकेँ जीयाकऽ राखैक फेरमे फँसि
नहुँ-नहुँ सुनगैत मरैत रहल करेज हमर

एतेक मारि खेलक झूठ प्रेमक खेलमे जमानासँ
कियो देखलक नै कुहरैत रहल करेज हमर

फेर कतौ नै कियो बम फोड़िकऽ अनाथ करै ककरो
सूर्योदय होइते धडकैत रहल करेज हमर

अपनाकेँ नित जीयाबैमे करेजक खून करैत छी
खसि-खसिकऽ देखू सम्हरैत रहल करेज हमर

दुख आ सुखमे अंतर करैमे नै ओझराकऽ कखनो
नब गीत सदिखन गबैत रहल करेज हमर
--------------- वर्ण २० ---------------------

गजल- ५२

ऐना तँ सदिखन हमरा सत्ते कहै छै
हमर रूप हमरे देखबैत रहै छै

चलि गेलौं तँ बूझलौं अहाँ हमर नै छी
बनल विश्वासक किला एहीना ढहै छै

धारकेँ कोन मतलब भूमिक दर्दसँ
जेम्हरे मोन भेल धार ओम्हरे बहै छै

देखू प्रेमक अकाल नै छै एहि गाममे
उधारक प्रेमक बाढ़िसँ गाम दहै छै

ककरो मारबाक चोट सहि लेत "ओम"
मुदा बूझै नै प्रेमक मारि कोना सहै छै
------------- वर्ण १५ --------------

गजल- ५३

आइ-काल्हि सदिखन हम अपनेसँ बतियाईत रहै छी
लोक कहैए जे हम नाम अहींक बड़बड़ाईत रहै छी

सभ बैसारमे आब चर्चा करऽ लागलौं अहींक नाम केर
सुनि कऽ कहै छै सभ जे निशाँमे हम भसियईत रहै छी

हमरा लागैए निशाँ आब टूटि गेल छै पीबि लेलाक बाद
सोझ रहैमे छलौं अपस्याँत आब डगमगाईत रहै छी

एते बेर नाम लेलौं अहाँक हम कहियो तँ सुन्ने हैब
कोन कोनटामे नुकेलौं अहींकेँ ताकैत बौआईत रहै छी

एक चुरू अपने हाथसँ आबि कऽ पीया दितिये जे "ओम"केँ
मरि जइतौं आरामसँ हम जाहि लेल टौआईत रहै छी
-------------------- वर्ण २२ --------------------

गजल- ५४

नित पूछै छै किछ सवाल इ जिनगी
करै सदिखन नब ताल इ जिनगी

कखनो बनि दुखक घुप्प अन्हरिया
लागै मारिसँ फूलल गाल इ जिनगी

सुखक राग कखनो सुनाबै एनाकऽ
रंगल बनि कतेक लाल इ जिनगी

कहै जिनगी होइत छै जीबैक नाम
ककरो लेल होइए काल इ जिनगी

जिनगीकेँ बूझैमे "ओम" ओझरायल
जतबा बूझलौं लागै जाल इ जिनगी
----------- वर्ण १४ -----------

गजल- ५५

एकटा खिस्सा बनि जइते अहाँ संकेत जौं बुझितहुँ
हमही छलहुँ अहाँक मोनमे कखनो तँ कहितहुँ

लोक-लाजक देबाल ठाढ़ छल हमरा अहाँक बीच
एको बेर इशारा दितिऐ हम देबाल खसबितहुँ

अहाँक प्रेमक ठंढा आगिमे जरि कऽ होइतौं शीतल
नहुँ-नहुँ भूसाक आगि बनि कऽ किया आइ जरितहुँ

सभकेँ फूल बाँटैमे कोना अपन जिनगी काँट केलौं
कोनो फूल नै छल हमर काँटो तँ अहाँ पठबितहुँ

जाइ काल रूकै लेल अहाँ "ओम"केँ आवाज नै देलिऐ
बहैत धार नै छलहुँ हम जे घुरि कऽ नै अबितहुँ
------------------ वर्ण २० --------------------

गजल- ५६

हमर नजरिमे पैसि कऽ हमर नजरि बनि फडकि रहल छी
पोर-पोरमे अहीं समेलौं सीनामे हमर अहीं धडकि रहल छी

विरह-विषसँ मोन पीड़ित छल अहाँक प्रेमक अमृत भेटल
प्रेम-सुधासँ मोन नै भरै जतबा पीबि ओतबा फरकि रहल छी

हृदयक छल बाट सुखायल जेकरा सिनेह अहाँक भीजायल
छन-छन भीजि प्रेमक बरखामे तखनो किया झरकि रहल छी

जिनगीक रौदीकेँ अहीं भगेलौं अहाँ प्रेम-मेघ केर छाहरि केलौं
भरल हमर आकाश प्रेमसँ अहाँ छी बिजुरि तड़कि रहल छी

भाव-शून्य "ओम"क छल जे अंतर जिनगीमे आबि मारि कऽ मंतर
अहीं बनलौं गजल कविता बनि भाव मोनमे बरकि रहल छी
------------------------- वर्ण २५ -------------------------

गजल- ५७

भेटलै जखने नबका मीत पुरनाकेँ कोना छोड़ि देलक
जकरासँ छल ठेहुँन-छाबा हमर मोनके तोड़ि देलक

सपथक नै कोनो मालगुजारी सपथक नै बही बनल
संग जीबै-मरैक सपथ खा कऽ जीबतै डाबा फोड़ि देलक

ओकरा लग छै ढेरी चेहरा हमरा लग बस एके छल
अपन भोरका मुँह पर नब मुँह साँझमे जोड़ि देलक

जिनगी-खेतमे विश्वास-खाद दऽ प्रेमक बीआ हम बुनल
धोखा केर कोदारि चला कऽ देखू लागल खेती कोड़ि देलक

"ओम" प्रेमक घर बनेलक ओकरा बिन छै सून पड़ल
बाट जे जाइ छल ओहि घरमे कोनो जोगारे मोड़ि देलक
-------------------- वर्ण २२ -----------------

गजल- ५८

कतौ छै रौदी प्रचंड कतौ बरखासँ हरान छै
कतौ छै फूजल मोन कतौ बन्न पेटीमे प्राण छै

ककरो भेल अपच कियो देखू भूखले मरल
कतौ छै होइत भोज कतौ उजड़ल दोकान छै

एके कलमसँ लिखलक किया भाग्य नै विधाता
कतौ छै तृप्त हृदय कतौ छूछे टा अरमान छै

कियो मुट्ठीमे समेटने कते इजोत छै बैसल
कतौ छै जे सून घर कतौ भरल इ दलान छै

अचरजसँ देखै छै "ओम" लीला एहि दुनियाँक
कतौ छै इ मौनी खाली कतौ बखारी भरि धान छै
------------------ वर्ण १८ ----------------

गजल- ५९

पिया जुनि करू बलजोरी लोक की कहत
प्रेम करू मुदा चोरी-चोरी लोक की कहत

तन्नुक शरीर मोरा यौवन उफनायल
चुप्पे बान्हू अहाँ प्रेम-डोरी लोक की कहत

थमल नै डेग अहाँ प्रेम-नोत पठाओल
हम आब बनलौं चकोरी लोक की कहत

श्याम रंगमे अहाँक मोर अंग रंगायल
दीयाबातीमे खेललौं होरी लोक की कहत

"ओम"क प्रिया इ आतुर मोनकेँ बुझाओल
कतेक कहब कर जोड़ि लोक की कहत
------------- वर्ण १६ -------------

गजल- ६०

ओ हमरा बिसरि गेल जे गाबैत रहै छल हमर गीत
शहरक हवा लागि गेलै आब भेल शहरी हमर मीत

मोनक कोनटामे नुकेलक नेनपनक सभ क्रीड़ा-खेल
खाइ छ्लै संगे पटुआ ओकरा लागै मधुर हमर तीत

छल जुटल जकरा संग हृदय हमर रहितो काया दू
हमरा हरबैथ आब अपमान बूझैथ ओ हमर जीत

दोस्तीक सपथ खाइत नै छलै अघाइत ओ हमरा संग
भसकेलक घर दोस्तीक द्वेषक बनि गेल हमर भीत

मीत घुरि आबू एखन्हुँ "ओम"क हृदयमे अहींक वास
फेर बहाबियौ धार दोस्तीक जे छल अहाँक हमर रीत
------------------- वर्ण २२ -------------------

(हमर नेनपनक मीतकेँ समर्पित जे हमरा बिसरि गेला)

गजल- ६१

घोघ तरसँ चान उगल अँगनामे इजोर पसरि गेलै
मोन हमर छल बान्हल किया आइ अपने पिछड़ि गेलै

मृगनयनी मोनमोहनी चंचल नयनसँ प्राण हतल
मुख पर नयन-कमल जै सुरभिसँ मोन पजरि गेलै

सुनि अहाँक वचन भऽ प्रेम मगन मोन-मयूर नाचल
प्रेम-बोली तोहर सुनल इ हृदय नाचि कऽ ससरि गेलै

हिय-आँगन पायल झन-झन संगीत मधुर छै बाजल
रोकि कोना जे मोन नाचल नै कहब किया नै सम्हरि गेलै

अहाँक अजगुत रूप देखि कऽ भाव "ओम" रोकि नै सकल
जे किछ छल मोन राखल कोना देखू सभटा झहरि गेलै

-------------------- वर्ण २२ -------------------

गजल- ६२

कर जोड़ै छी सरकार आब रहऽ दियौ
कते करब भ्रष्टाचार आब रहऽ दियौ

'टू जी' चारा खान घोटाला किछो नै छूटल
भरि गेल अछि 'तिहाड़' आब रहऽ दियौ

मुखिया बनैसँ पहिने चलै छलौं पैरे
कोना चढ़ऽ लगलौं कार आब रहऽ दियौ

कण्ठ मोकि जनताक कते राज करब
जनता नै छै यौ लाचार आब रहऽ दियौ

कोना फूसि बाजि अहाँ "ओम"केँ ठकि लै छी
केलिऐ लाजक संहार आब रहऽ दियौ

----------- वर्ण १५ ---------------

गजल- ६३

मिझबै लेल पेटक आगि देखू पजरि रहल छै आदमी
जीबाक आस धेने सदिखन कोना मरि रहल छै आदमी

डेग-डेग मँहगी केर निर्दय जाँतमे पीसल राति दिन
पीअर मुँह बिहुँसि कऽ उठौने कुहरि रहल छै आदमी

जनसंख्याक नांङरि कियाक बढ़ले जाइए बिन थाकल
फसिलक उपजा कम भेल सौंसे फरि रहल छै आदमी

स्वार्थक एहन बिहाड़ि चलल छै आइ मनुक्खक गाममे
सम्बन्धक झरकल गाछसँ आब झरि रहल छै आदमी

कहियो हँसीक ईजोर पसरतै "ओम"क अन्हार टोलमे
यैह सोचैत सलाई विश्वासक रगड़ि रहल छै आदमी

------------------- वर्ण २२ -------------------

गजल- ६४

हमर हृदयक कुंज-गलीमे विचरैत मोन्क मीत अहीं छी
गाबि-गाबि जे मोन सुनाबै सदिखन ओ राग अहीं गीत अहीं छी

जिनगी हमर पहिने कहियो एते सोअदगर किया नै छल
सभटा सोआद अहींमे छै बसल मीठ नोनगर तीत अहीं छी

आँखिक बाट मोनमे ढुकि कऽ प्रेमक घर आलीशान बनेलिऐ
ओहि घरक कण-कणमे छै नाम अहींक ओकर भीत अहीं छी

जुग-जुगसँ प्रेमक धारमे अहीं हमर पतवार बनल छी
हमर प्रेमक दुनियाँक सुन्नर रंग सभटा आ रीत अहीं छी

"ओम"क मोन केर कोन-कोनमे बसल रहै छै अहींक सुरभि
आब ई जमाना सँ की लेनाई प्रिये हमर हार आ जीत अहीं छी

------------------------ वर्ण २४ ------------------------

गजल- ६५

बालुक भीत बनल जिनगी चमकै छै कोना
सुखायल ई फूल सम्बन्धक गमकै छै कोना

नकली मुस्कीक भीड़मे हरायल कतौ हँसी
चिन्ता भरल मुँह पर मुस्की दमकै छै कोना

पैघ भेल जाइ छै मनुक्ख झूस विचार भेलै
कर्म-धारमे हल्लुक विचार जमकै छै कोना

भऽ रहलै तमाशा नाचक बिना सुर-तालके
सरगम कतौ नै मुदा पैर झमकै छै कोना

काठक बनल लोक रहै छै ऊँच मकानमे
जे सुनै छै कियो नै किछ "ओम" बमकै छै कोना

------------------ वर्ण १७ ----------------

गजल- ६६

क्रिया एना ई भऽ गेल छै देखू उनटा व्यवहार
हर वहै से खढ़ खाय छै बकरी खाय अचार

ककरो तन नै झाँपल किओ आडम्बर छै केने
किओ तरसल बूँद लेल लागल कतौ सचार

रामनामा ओढ़ि कऽ आबै भीतर रखने खंजर
छै जकर मोन दरिद्र हमरा देलक हकार

महगी केर बाण चलै छै चाम देहक नोचैत
जन-जन ओ बाण सहै भूशायी पड़ल लाचार।

जीबै केर अधिकार छिनायल "ओम" देखू कोना
'सुनामी' बनि तड़पैत मोनमे भरल विचार

--------------- वर्ण १८ ----------------

गजल- ६७

धरल रहि जैत होशियारी मोटरी बान्हने की हैत
जखन टूटल अछि केवाड़ी यौ ताला भरने की हैत

नीमक पात तर चानन कानै ई कोन रीत रचेलै
जे ई सवार बनल सवारी नाक रगड़ने की हैत

केहेन गाछी अहाँ लगेलौं जे भूताहि भेल जाइए यौ
बढ़बै लागै जखन बेमारी दवाई कीनने की हैत

झरकल मुँहकेँ झाँपने नीक होइत छै सदिखन
राखले रहि जैत ई तैयारी मुँहकेँ रँगने की हैत

शीशा महग भेल हीरासँ "ओम"केँ अचरज लागल
राखले घर भरल बखारी सगरो कानने की हैत

---------------- वर्ण २० -----------------

गजल- ६८

आगि फजरलै जखन धुआँ उठबे करत यौ
इ प्रेममे डूबल मोन खिस्सा रचबे करत यौ

किया करेज पर खंजर नैनक अहाँ चलेलौं
ककरो खून भेलै इ दुनियाँ बूझबे करत यौ

होइ छै प्रेमक डोरी तन्नुक एकरा जूनि तोड़ू
जोड़बै तोड़ल डोरी गिरह बन्हबे करत यौ

राम-नाम मुख रखने प्रेमक बाट नै धेलिऐ
प्रेमक बाट जे चलबै मुक्ति भेटबे करत यौ

बीत-बीत दुनियाँक प्रेमक रंग मे रंगि दियौ
"ओम"क इ सपना अहाँ संग पूरबे करत यौ

--------------- वर्ण १८ ---------------

गजल- ६९

मुस्की अहाँक हमर काल बनल अछि
नैनक चालि जीकेँ जंजाल बनल अछि

अहाँकेँ देखि सुरूज कोनटा नुका गेल
लाल अहाँक एहन गाल बनल अछि

लिखते रहै छी पाती अहाँकेँ प्रिये हम
राखै छी घरे पातीक टाल बनल अछि

हमरो सुधि कखनो लियै ने प्रियतम
अहींकेँ सुमिरैत की हाल बनल अछि

"ओम" दीप बनि जरै इजोत अहीं लग
देखू प्रेमक खिस्सा विशाल बनल अछि

-------------------वर्ण १५-------------------

गजल- ७०

आउ मिल मोनक दीप जराबी दियाबाती आबि गेलै
सिनेह तेल हिया बाती बनाबी दियाबाती आबि गेलै

अंगनामे फेरता ऊक बाबा दुख रोग भगाबै लेल
डाह-घृणाकेँ हम ऊक घुमाबी दियाबाती आबि गेलै

दरिद्रा आब कतौ नै रहतै जे सूप डेंगाओल जैत
मैया संगे सगरो सूप डेंगाबी दियाबाती आबि गेलै

हलुआ-पूडी लड्डू-बताशा सबहक घर बन्ल छै
आइ खूब प्रेम-मधुर खुआबी दियाबाती आबि गेलै

मँहगी गरीबी बेरोजगारी हिंसाकेँ नाच पसरल
"ओम" संग इ सभ दूर भगाबी दियाबाती आबि गेलै

-------------------वर्ण २०-------------------

गजल- ७१

पिया हमर रूसल जाइत किछ नै बजै छैथ
करब हम कोन उपाय ककरो नै सुनै छैथ

बड्ड जतनसँ कोठा बनल जे सून पड़ल छै
कतऽ सँ भेटल हकार पिया घुरि नै तकै छैथ

आउ सखि शृंगार करू मोर पियाक मोन भावै
कोन निन्नमे सूतला हमरा किया नै देखै छैथ

चानन काठ केर महफा छै बहुत सजाओल
ओहिमे लऽ चलल पियाकेँ कनियो नै कनै छैथ

सासुरक सनेस पर "ओम"केँ लागल उजाही
नैहरक सखा सभ छूटल यादि नै आबै छैथ

----------------वर्ण १८----------------

गजल- ७२

धार नहि होइए मुक्त बान्हकँ कोना कऽ तोड़ब
बहैत ह्वा मुट्ठीमे बन्न हम कोना कऽ करब

सफना होइ छै सपना क्तबो सोहाओन हुए
निन्न टूटै पर ओकरा अपन कोना कऽ कहब

अनकर आस बेनियाक बसात सत्ते कहै छै
ककरो मुँहकँ ताकैत आसमे कोना कऽ रहब

नोंचि लेलिऐ कियाक अहाँ सुन्नर पंख चिड़ैक
बिन पंख आकाशक नोत आब कोना कऽ पूरब

बिलमि जइयो कनी "ओम"क गाममे किछ खन
केहन छै गाम हमर से अहाँ कोना कऽ बूझब

----------------वर्ण १८----------------

गजल- ७३

रूसल छै कपार कहियो बौंसेबे करतै
मोन रहतै टूटल कते जोडेबे करतै

सागरक कात सीप बिछैत रहब हम
कोनो सीपमे कखनो मोती भेटेबे करतै

क्षितिजक बाटकेँ हम धेने छी सदिखन
आकाशमे हमरो हिस्सा कनी हेबे करतै

सजबै छी अपन उपवन एहि आसमे
उजड़ल घरमे सुगंध भरेबे करतै

कियो मानै नै मानै "ओम" इ कहिते रहत
नैन रहतै नै पियासल जुड़ेबे करतै

.....................वर्ण १६.......................

गजल- ७४

जखन मोनमे प्रेमक आँकुर फूटल तखन प्रेमक गाछ निकलबे करत
जखन जवानीक ककरो लुत्ती लागल तखन प्रेमक धधरा उठबे करत

प्रेम छै रामायण प्रेम छै गीता पुराण प्रेम छै पूजा-पाठ प्रेम ईश-भगवान
जखन इ मोन पवित्र मंदिर बनल तखन प्रेमक मुरूत बसबे करत

जिनगी कछेर बनल इ प्रेम छै धार प्रेम इ समाज बनबै प्रेम परिवार
जखन हिय सिनेहक संगम रचल तखन प्रेमक इ गंगा बहबे करत

प्रेमकेँ बान्हत डोरी एखन नै बनल प्रेम मुक्त छै सदिखन सहज सरल
जखन जिनगी-आकाशक सीमा हटल तखन प्रेमक चिड़ैयाँ उड़बे करत

"ओम"क निवेदन अहाँ कते नै सुनब एना अहँ चुप रहि कते मूक बनब
जखन याचना अहाँक मोनमे ढुकल तखन प्रेमक भिक्षा तँ भेटबे करत

......................वर्ण ३०.......................

गजल- ७५

ताकलौं एना किया कोनो पैघ बात भय गेलै
मोन डोलै हमर पीपरिक पात भय गेलै

बिन पीने इ निशाँ किया हमरा लागै लागल
हमरा बूझि कऽ शराबी लोक कात भय गेलै

हमरा हमरेसँ चोरी अहाँ कोना कय लेलौं
बन्न छल हिय-खिडकी कोनो घात भय गेलै

प्रेमक सींचल जिनगी आब भेलै रसगर
सुखायल चाउर छलै मीठ भात भय गेलै

सभ ओझरीसँ हम भिन्ने नीक रहैत रही
नैन-ओझरी लागल "ओम"क मात भय गेलै
..................वर्ण १७.....................

गजल- ७६

आगि लागल मोनक धाहकेँ रोकि देलिऐ
कोनो दुख गहीर छल मुस्की मारि देलिऐ

अपन मोनक धार कियो कोना कऽ रोकत
इयाद जे हमरा करेजमे भोँकि देलिऐ

आँखिक कोर भीजल नोर किया नै खसल
कृपणक सोन जकाँ ओकरा राखि देलिऐ

नोर इन्होर होइ छै एहिसँ बाँचि कऽ रहू
फेर कहब नै अहाँ किया नै टोकि देलिऐ

"ओम"क फाटल छाती कियो देख नै सकल
कोनो जतनसँ ओकरा हम सीबि देलिऐ
......................वर्ण १६.........................

गजल- ७७

मोनक आस आब टुअर भेल
तृष्णा एखनहुँ नै दुब्बर भेल

अन्हारसँ झरकैत रहलहुँ
इजोत नै कखनो हमर भेल

मधुमाछी मधु बनबैत रहै
मधु सदिखन अनकर भेल

कुहेसक मारल बाट कातेए
रौद नै एखन सनगर भेल

चीनी फाँकैत तबाह भेल "ओम"
मधुर कियाक नोनगर भेल

............वर्ण १२.............

गजल- ७८

थानकेँ नापबाक फेरमे गज फेकल जाइए
आकाश छूबाक फेरमे जमीन छूटल जाइए

भाँति-भाँतिक सुन्नर फूल लागल फुलवारीमे
कमल लगेबाक फेरमे गेना टूटल जाइए

चानीसँ संतोख भेल नै आब सोनक पाँछा भागू
सोन कीनबाक फेरमे इ चानी रूसल जाइए

दूरक चमकैत वस्तु अंगोरा भय सकै अछि
मृगतृष्णाक फेरमे देखू मृग कूदल जाइए

चानक इजोरियामे काज "ओम"क होइते छल
भोर-इजोरियाक फेरमे चान डूबल जाइए

------------ वर्ण १८ -------------

गजल- ७९

हवामे अहाँ लात चलबैत रहू हमरा की
आकाश पर भात बनबैत रहू हमरा की

हम गामक पोखरिमे माछ मारैत रहब
जाउ अहाँ समुद्र उपछैत रहू हमरा की

एखन धरि हम खम्भा गाड़ैमे परेशान छी
बड़का महल अहाँ ठोकैत रहू हमरा की

हमर आँखिक सपना आँखियेमे मरि गेल
अहाँ जागले सपना देखैत रहू हमरा की

"ओम" कहैत रहत अहिना सोझ-सोझ गप्प
अहाँ सभकेँ टेढ़े सुनबैत रहू हमरा की

------------ वर्ण १७ ----------------

गजल- ८०

हम कातसँ सदिखन देखते रहलिऐ
हम नै बजलिऐ अहुँ किछ नै सुनेलिऐ

नैनक धार अहाँक जे उफनैत रहल
चुप रहि हम ओहिमे हेलैत रहलिऐ

मदमस्त नैना अहाँक जुलुम कऽ रहल
बिजुरी खसेनाई अहाँ कतऽ सँ सीखलिऐ

शुरू भेल इ खिस्सा हमर जे अहींसँ प्रिये
सभ किछ बूझैत किया अहाँ नै बूझलिऐ

एना अन्हार केने "ओम"क प्रेम-संसारमे
मुख-चान कतऽ अहाँ नुकबैत रहलिऐ

------------ वर्ण १६ ----------------

गजल- ८१

टूटल मोनकेँ हम बुझावैत रहि गेलौं
एक मीसिया हँसी हम ताकैत रहि गेलौं

फूलक मुस्की कैद छै काँटक महाजालमे
जालसँ मुस्कीकेँ हम छोड़ाबैत रहि गेलौं

सूरजक हँसी हरायल मेघक ओटमे
फूँकि कऽ मेघ हम उधियाबैत रहि गेलौं

निर्झर अछि शांत भेल पाथरक चोटसँ
चोटक दाग मोनसँ मेटाबैत रहि गेलौं

छिड़ियायल छै हँसी "ओम"क वश नै चलै
हाथक सफाई हम देखाबैत रहि गेलौं

----------- वर्ण १६ ---------------

गजल- ८२

किछो किछ नै सुनै छै अहाँ करै छी बवाल
अहाँ नै बूझै छी बहिरा नाचै अपने ताल

ककरासँ माँगै छी अहाँ अपन जबाव यौ
बाजत कोना एखन नै बूझलक सवाल

हुनकर मुस्कीके देखि अहाँ की बूझि गेलौं
चवन्नियाँ मुस्की हुनकर अदाक कमाल

नीतिशास्त्रक हुनका पाठ बुझौने हैत की
ओ जेबीमे रखै छथि नीति बूझि कऽ रूमाल

देखैत अछि नौटंकी "ओम" हुनकर चुप्पे
लागै हुनका जे हम छी तिरपित निहाल

------------ वर्ण १६ ---------------

गजल- ८३

डेग दैत पूरब अहाँ पच्छिम पताइत छी
चढ़ल मस्ती जवानीक अहाँ अगधाइत छी

बिना पुजारीक मन्दिरक शोभा नै भावै अछि
हम छी प्रेम-पुजारी अहाँ नै पतियाइत छी

नैनक इशारासँ जे अहाँ किछु कहि देलिऐ
ओ सभक सोझाँ सुनाबैमे किया लजाइत छी

संकेत अहाँकेँ हम अपन प्रेमक पठेलौं
कहलौं अहाँ देखू किया एना भसियाइत छी

"ओम" लुटेने अछि पूरा जिनगी अहीं पर यै
मोन-आँगनमे रहियौ किया खिसियाइत छी

------------ वर्ण १७ ----------------

गजल- ८४

माटिक बासनमे भय गेल भूर ओकरा फोड़िये देनाई नीक
जखन विश्वास भय गेल चूर ओ रिश्ताके तोड़िये देनाई नीक

फरियाद सुनावैत पूरा जीवन ताकैत छी किया रखने आस
कानमे ठूँसने रहैथ जे तुर ओ हाकिम छोड़िये देनाई नीक

बिना मिलेने ताल-मात्रा कखनो सु-संगीत कहाँ अछि निकलल
कक्करोसँ मिलल नहि जे सुर महफिल छोड़िये देनाई नीक

अपस्याँत भेल छी मरखाह बड़दके खूँटामे बान्हि राखयमे
बेसी चलबय लागै जे खुर ओ बड़दके खोलिये देनाई नीक

फाटल वस्त्र कहुना पैबंद लगा कऽ पहरि सकैत अछि "ओम"
मुदा जाहि मे सगरो अछि भूर ओ कपड़ा फेकिये देनाई नीक

------------- वर्ण २४ ----------------

गजल- ८५

मूर्ख दिवस (०१ अप्रैल) के अवसरपर हमर विशेष प्रस्तुति

मूर्ख दिवस पर पता चलल हम सभसँ बड़का मूर्ख थिकौं
आइ धरि इ कियो कहाँ कहल हम सभसँ बड़का मूर्ख थिकौं

जिनगीक चुल्हिमे जरि गेल सभटा कथा कविता आर गजल
देखू एक्के शेर नै ठीक बनल हम सभसँ बड़का मूर्ख थिकौं

हमरा "फूल"* बूझि कऽ ओ फूल पठौलनि झुठक मुस्कीमे सानल
बूझलौं ओकरे हृदय कमल हम सभसँ बड़का मूर्ख थिकौं

मुँहमे राम बगलमे छूरी इ हमरासँ कहियो नै सपरल
बनि नै सकल हमर महल हम सभसँ बड़का मूर्ख थिकौं

सुनलौं सभ ठाम खूब माखै छथि बुधियार टोलक रहबैया
एहि दुनियाँमे "ओम" मूर्खे भेल हम सभसँ बड़का मूर्ख थिकौं

……………….....सरल वार्णिक २४ वर्ण………………......……

(ऐठाम "फूल" माने अंग्रेजीक फूल अर्थात मूर्ख।)

गजल- ८६

बाहरक शत्रु हारि गेल मुदा मोन एखनहुँ कारी अछि
नांगरि नहि कटा कऽ मुड़ी कटबैक हमर बेमारी अछि

तेलसँ पोसने सींग रखै छी व्यर्थ कोना हम होबय देबै
खुट्टा अपन गाड़ब ओतै जतऽ सभक सँझिया बाडी अछि

पेट भरल अछि तैं खूब भेजा चलैए नै तँ हम थोथ छी
ढोलक कियो बजाबै मस्त भेल बाजैत हमर थारी अछि

जीतबा लेल ढेरी रण बाँचल एखन कहाँ निचेन हम
केहनो इ व्यूह होय टूटबे करतै जँ पूरा तैयारी अछि

डाह-घृणाकेँ अहाँ कात करू इ अस्त्र शस्त्र नै कमजोरी छै
आउ सभ ओहिठाम जतय रहै "ओम" प्रेम-पुजारी अछि

सरल वार्णिक बहर वर्ण २२

गजल- ८७

चढ़ल फगुन हमर मोन बड्ड मस्त भेल छै
पिया बूझै किया नै संकेत केहन बकलेल छै

रससँ भरल ठोर हुनकर करैए बेकल
तइयो हम छी पियासल जिनगी लागै जेल छै

कोयली मधुर गीत सुना दग्ध केलक करेज
निर्मोही हमर प्रेम निवेदनकेँ बूझै खेल छै

मद चुबै आमक मज्जरसँ निशाँ चढै हमरा
रोकू जुनि इ कहि जे नै हमर अहाँक मेल छै

प्रेमक रंग अबीरसँ भरलौं हम पिचकारी
छूटत नै इ रंग ऐमे करेजक रंग देल छै

(सरल वार्णिक बहर वर्ण १८)

फागुनक अवसरपर विशेष प्रस्तुति।

रुबाइ

रूबाइ- १

कखनो तँ हम अहाँकँ मोन पड़िते हैब
यादिक दीप बनि करेजमे जरिते हैब
बनि सकलहुँ नै हम फूल अहाँक कहियो यै
मुदा काँट बनि नस नसमे तँ गड़िते हैब

रूबाइ- २

कोना कऽ रंगलक करेजकँ इ रंगरेज रंग छूटै नै
नैन पियासल छेड़ि गेल मुदा आस मिलनक टूटै नै
हमरा छेड़ि तड़पैत पिया अपने जा बसला मोरंग
बूझथि विरहक नै मोल भाग्य इ ककरो एना फूटै नै

रूबाइ- ३

हमर करेज संगे खेलाईत रहलौं इ कोन खेल अछि
मिलन अहाँसँ हमर खुजल आँखिक सपना भेल अछि
जाड़क रौद कहै छलौं हमरा इ एखन धरि मोन अछि
अनचिन्हार छी आब अहाँ लग लोकक ठेलम-ठेल अछि

रूबाइ- ४

अहाँक दुनू नैन बनल अछि हमर जिनगीक सम्बल
मुस्की अहाँक करैत रहै अछि हमरा सदिखन शीतल
भेटतौं अहाँ जौं नै हमर जिनगीमे सोआद कहाँ रहितै
अहीं प्रेरणा बनल रहै छी देखि अहींकेँ लिखै छी गजल

रूबाइ- ५

संगी सभसँ नीक शराब छै देखू कहियो नै बदलै छै
एकर निशाँक नै जवाब छै देखू कहियो नै बदलै छै
टूटल करेज जोड़ि दैए दुखक तापकेँ करै शीतल
फेर कहिऐ कोना खराब छै देखू कहियो नै बदलै छै

रूबाइ- ६

पीनाई तँ हम छोड़ि देब मुदा पीनई हमरा नै छोड़ैए
जीनाई तँ हम छोड़ि देब मुदा जीनाई हमरा नै छोड़ैए
होशमे आबै ले पीनाई छै बड्ड जरूरी सुनि लियऽ यौ दोस्त
पीबि कऽ हम होशमे छी ढनमनेनाई हमरा नै छोड़ैए

रूबाइ- ७

अहाँ केर राजभवनक ऊँच सिंहासन हमरे छी
बाँटि कऽ जकरा अहाँ हँसैत छी ओ राशन हमरे छी
जनताक जे छै अधिकार सभटा आब अहाँ दऽ दियौ
कूदि रहल छि जाहि पर खूब ओ आसन हमरे छी

रूबाइ- ८

जागल आँखि केर सपना बनल जिनगी
कुहरल आश केर झपना बनल जिनगी
फाटल छल करेज हम सीबैत रहलौं
रूसल सुखक आब नपना बनल जिनगी

कता- १

चलल पूरबा जखन उड़ल आँचर अहाँक
उधियाइत आँचर हमर करेज लेने गेल
कारी मेघकेँ मात करैत अछि काजर अहाँक
सगरो दुनियाँमे देखियौ घुप्प अन्हरिया भेल

कता- २

अहींसँ शुरू अहीं पर खतम ई खिस्सा हमर
करेजमे अहाँक छवि हम तँ बसा रखने छी
आब अछि अहाँक छवि करेजक हिस्सा हमर
ककरो नजरि नै लागै एकरा नुका रखने छी